अशोक का धम्मः पृष्ठभूमि, स्वरूप, प्रचार-प्रसार

भाग-2

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सा||||हरसा

अशोक के धम्म का स्वरूप

अशोक के धम्म के वास्तविक स्वरूप के संबंध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद हैं. अनेक विद्वानों का धारणा है कि अशोक का धम्म वस्तुतः बौद्ध धर्म ही था और इससे भिन्न कुछ भी नहीं था. अन्य विद्वान अशोक के धर्म को बौद्ध धर्म से भिन्न मानते हैं.

आरंभ में अशोक बौद्ध धर्म का अनुयाई था. इसकी पुष्टि महावंश से होती है. दीपवंश के अनुसार श्रवण निग्रोध और मोगलीपुत्र तिस्स के प्रभाव में आकर उसने बौद्ध धर्म अपना लिया. कलिंग युद्ध के पूर्व ही वह बौद्ध धर्म के प्रभाव में आ चुका था परंतु विधिवत इस धर्म में दीक्षित वह कलिंग युद्ध के पश्चात ही हुआ.

बौद्ध धर्म से प्रभावित होते हुए भी अशोक ने जिस नए धम्म की कल्पना की है वह बौद्ध धर्म से भिन्न था. इसके अंतर्गत चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग या निर्वाण आदि की कल्पना नहीं की गई. अशोक धम्म को मानने वालों के लिए भिक्षुक का जीवन व्यतीत करने या उनके लिए संघ की स्थापना की भी बात नहीं करता है. अपने धर्म की व्याख्या अशोक स्वयं अपने अभिलेखों में करता है.

अशोक का धम्म कोई नया धर्म नहीं था बल्कि सभी धर्मों की अच्छी बातों को इसमें सन्निहित किया गया था. यह वास्तव में नैतिक नियमों का संग्रह था. वह सर्वसाधारण के लिए मानव धर्म था. अशोक स्वयं बौद्ध धर्म का मानने वाला था परंतु उसके अभिलेखों में जिस धम्म का उल्लेख मिलता है और जिसका प्रचार उसने किया वह सर्वसाधारण प्रयास किया गया.

यह कामना राजधर्म भी नहीं था जिसे जबरदस्ती सब पर थोपने का प्रयास किया गया. इसके संबंध में यह कामना की गई थी कि उसे उत्तराधिकारी और प्रजा सभी स्वेच्छा से पालन करेंगे. वस्तुतः धम्म के द्वारा अशोक का उद्देश्य सहिष्णुता के आधार पर सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखना था. उसने किसी नये धर्म की स्थापना नहीं की.

अशोक के धर्म के दो पहलू हैं व्यावहारिक तथा सैद्धांतिक.व्यावहारिक पहलू को दो भागों में विभक्त किया गया है स्वीकारात्मक और निषेधात्मक. दूसरे तथा सातवें अभिलेखों में अशोक स्वयं धम्म की व्याख्या करता है. "धर्म है साधुता, बहुत से अच्छे कल्याणकारी कार्य करना, पाप रहित होना, मृदुता, दूसरे के लिए व्यवहार में मधुरता, दया, दान, सत्य और पवित्रता."

इसके अतिरिक्त धर्म का पालन करने वालों को जीव हिंसा से बचने, माता-पिता की आज्ञा मानने, गुरुजनों के प्रति आदर का भाव प्रदर्शित करने, मित्रों परिचितों संबंधियों ब्राह्मणों तथा श्रवनों के प्रति दानशीलता दिखाने एवं उचित व्यवहार करने तथा दासो और भृत्यों के साथ अनुचित व्यवहार नहीं करने का भी आदेश दिया गया है. इसी प्रकार अल्प व्यय एवं अल्प संग्रह (तीसरा अभिलेख) भी धम्म है.

अशोक धम्म के निषेधात्मक पक्ष अर्थात इसकी प्रगति में बाधक तत्वों का भी उल्लेख करता है. पाप धम्म की प्रगति को रोकता है. यह पाप विभिन्न प्रकार के हैं जैसे निष्ठुर्य, क्रोध, मान और ईर्ष्या. अतः धर्म की प्राप्ति के लिए इनसे बचना आवश्यक है.

व्यवहारिक पक्ष के अतिरिक्त धन के कुछ सैद्धांतिक पहलू भी थे. अशोक परलोक में विश्वास करता था. वह अपनी प्रजा के भौतिक एवं इहलौकिक कल्याण की भी कामना करता था. वह सभी धर्म का प्रचार प्रसार करना चाहता था. उसमें धार्मिक कट्टरता नहीं था. इसीलिए उसने सभी संप्रदायों को सभी स्थानों में वास की सुविधा प्रदान की.

उसने धर्म मंगल की श्रेष्ठता और धर्म दान की महत्ता स्थापित करने का प्रयास किया. वह धम्म द्वारा विजय और सच्चे यश की भी कामना करता है. धम्म ही उसके शासन का मुख्य आधार था. इसलिए उसने धर्म के प्रचार के लिए कार्य किए. इस तरह अशोक का धम्म व्यवहारिक फलमूलक और अत्यधिक मानवीय था.